1 कर्मवीर

अभ्यास

प्रथम भाग : विकासात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर

उत्तर– (क) जो लोग अपनी मदद स्वयं करते हैं वे लोग दूसरों का मुँह कभी नहीं ताकते हैं।

(ख) कर्मवीर अपने समय को बातें करते हुए व्यर्थ नहीं बिताते?

(ग) कर्मवीर अपने कठोर परिश्रम द्वारा चिल चिलाती धूप को चाँदनी बना देते हैं।

(घ) कवि इस कविता के माध्यम से यह संदेश देना चाहता है कि कर्म पर विश्वास रखने वाला व्यक्ति कभी असफल नहीं होता है। अत: हम सभी को कर्मवीर बनना चाहिए।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– स्वयं कीजिए।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✗)।

IV. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो—

उत्तर–

आज	**कल**	आसमान	**जमीन**
दिन	**रात**	धूप	**छाँव**
कठिन	**सरल**	उत्थान	**पतन**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) कर्मवीर अपने समय को काम करके बिताते हैं।

(ख) कर्मवीर दूसरों की सहायता इसलिए नहीं लेते हैं क्योंकि वह अपनी मदद (जरूरत पड़ने पर) स्वयं करते हैं।

(ग) कर्मवीर अपने कठोर परिश्रम द्वारा चिलचिलाती धूप को चाँदनी बना सकते हैं।

(घ) कर्मवीर अपने परिश्रम से कोयले को कार्बन और काँच को उज्ज्वल रतन बना देते हैं।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) कर्मवीर दूसरों का मुँह कभी नहीं **तकते**।

(ख) कर्मवीर **यत्न** करने में कभी जी नहीं चुराते।

(ग) जो कर्मवीर हैं वे कभी कोसों पैदल चलकर भी नहीं **थकते**।

(घ) कर्मवीर काँच को भी **उज्ज्वल** रतन बना देते हैं।

III. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो—

उत्तर–

जगत	**संसार**	**दुनिया**	समय	**काल**	**अवसर**
यत्न	**उपाय**	**कोशिश**	गगन	**आसमान**	**आकाश**
वृथा	**व्यर्थ**	**बेकार**	संपदा	**धन**	**सम्पत्ति**

IV. निम्नलिखित भाव जिन पंक्तियों से प्रकट होता है, उन्हें लिखो–

उत्तर– (क) आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।।

(ख) चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।।

(ग) जो कि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे के चना।
है कठिन कुछ भी नहीं, जिनके है जी में यह ठना।।

(घ) जो गगन के फूल बातों में वृथा नहीं तोड़ते।
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।।

V. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

उत्तर– (क) लोहे के चने-चबाना — कठिन कार्य करना।

प्रयोग—पी०सी०एस० की परीक्षा पास करना लोहे के चने चबाना है।

(ख) जी में ठानना — पक्का इरादा करना।

प्रयोग—राम ने जी में ठान लिया कि वह कक्षा में प्रथम आकर दिखाएगा।

(ग) दिन गँवाना — समय नष्ट करना।

प्रयोग—हमें व्यर्थ के कामों में अपना दिन नहीं गँवाना चाहिए।

(घ) मुँह मोड़ना — पहचानने से मना करना।

प्रयोग — मोहन ने अपने बचपन के दोस्त को देखकर मुँह मोड़ लिया।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

साहसी बालिका

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) मीलों दूर तक फैले समुद्र के बीचोंबीच कहीं-कहीं प्रकाश-स्तंभ बने होते हैं।

(ख) साहसी बालिका एक चौदह वर्ष की लड़की ग्रेस थी।

(ग) बालिका ने दूरबीन से एक डूबते हुए जहाज को देखा।

(घ) हाँ बालिका ने उन यात्रियों की रक्षा की, क्योंकि उसके मन में लगन थी कि यात्रियों को बचाना है।

(ङ) इस कहानी के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि हमें विपत्ति में भी साहस से काम लेना चाहिए क्योंकि साहस द्वारा सभी असंभव कार्यों को संभव किया जा सकता है। अत: हमें सभी कार्य साहस पूर्वक करने चाहिए।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) समुद्र के बीचों-बीच (ख) डूबता जहाज (ग) यात्रियों की

(घ) ग्रेस (ङ) उपहार

IV. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखो—

उत्तर– पिता	**माता**	माँ	**बाप**
बालिका	**बालक**	पुरुष	**स्त्री**
देव	**देवी**	दादी	**दादा**

V. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखो–

उत्तर– चट्टान	**चटटानें**	यात्रियों	**यात्री**
बालिकाओं	**बालिका**	लहरें	**लहर**
जहाज	**जहाजों**	तख्ते	**तख्ता**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) प्रकाश-स्तंभ समुद्र में छिपी हुई चटटानों से जहाजों को सावधान करने तथा मार्ग दिखाने के लिए बनाए जाते हैं।

(ख) बालिका का पिता प्रकाश-स्तंभ का कर्मचारी था। वह किसी काम से शहर में गया था।

(ग) बालिका के मन में यह बात थी कि यात्रियों को बचाना है।

(घ) ग्रेस ने देखा कि जहाज डूब चुका है, परंतु एक लकड़ी के तख्ते पर चौदह यात्री किसी प्रकार चिपके

हुए हैं। ग्रेस ने एक-एक करके सभी यात्रियों को अपनी नाव पर चढ़ा लिया और वह सावधानी से नाव खेते हुए प्रकाश-स्तंभ पर पहुँच गई।

(ङ) यात्रियों ने ग्रेस के इस साहसी कार्य के लिए इस प्रकार धन्यवाद दिया, सभी यात्रियों ने उस साहसी बालिका के सुखी जीवन के लिए भगवान से प्रार्थना की तथा उसे अनेक उपहार दिए।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) प्रकाश-स्तंभ का कर्मचारी उस **बालिका** का पिता था।
(ख) उस रात बहुत भयंकर **आँधी** आई।
(ग) प्रकाश-स्तंभ **लंदन** से थोड़ी दूर पर था।
(घ) ग्रेस ने **साहस** नहीं छोड़ा।
(ङ) यात्रियों ने उसे अनेक **उपहार** दिए।

III. सही कथनों के सामने (✓) और गलत कथनों के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)।

IV. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए—

उत्तर– (क) बालिका दूरबीन से देख रही थी।
(ख) आँधी अभी तक चल रही थी।
(ग) उन दोनों ने रात बिताई।
(घ) यात्रियों ने उसे अनेक उपहार दिए।

V. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए—

उत्तर–

सुखी	**सुख**	मनुष्य	**मनुष्यता**
दुःखी	**दुःख**	बालक	**बचपन**
साहसी	**साहस**	मानव	**मानवता**

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र

अभ्यास

प्रथम भाग : विकासात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) राजा हरिश्चंद्र की चर्चा सर्वत्र इसलिए थी क्योंकि वह सत्यवादी, परोपकारी, दानी और त्यागी थे।
(ख) राजा हरिश्चंद्र के दरबार में महर्षि विश्वामित्र उपस्थित हुए।
(ग) हरिश्चंद्र ने बिना कर लिए हुए अपने स्वयं के पुत्र के शव को जलाने से भी मना कर दिया। इस प्रकार राजा हरिश्चंद्र ने अपने कर्त्तव्य का पालन किया।
(घ) यदि हरिश्चंद्र स्वप्न में दिए गए दान की बात को अस्वीकार कर देते तो उन्हें सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं कहा जाता, क्योंकि ऐसा करने से वे उस सत्य का साथ छोड़ देते जिसके लिए उन्हें जाना जाता था।
(ङ) राजा हरिश्चंद्र का जीवन ''सत्य पालन' का साक्षात् उदाहरण है?

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) इक्ष्वाकु वंश में (ख) देवराज इंद्र की (ग) कालू डोम ने
(घ) श्मशान का कर (ङ) सत्यवादिता के लिए

IV. निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थी शब्द लिखो—

उत्तर–

कर	**हाथ**	**लगान**	**विषय**
अंबर	**आसमान**	**आकाश**	**वस्त्र**

कोष	**समूह**	**ढेर**	**संचित धन**
तप	**तपस्या**	**ग्रीष्मकाल**	**अग्नि**
पद	**पैर**	**पाँव**	**कदम**

V. पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के लिंग लिखो—

उत्तर–

दरबार	**पुल्लिंग**	बात	**स्त्रीलिंग**
सुख	**पुल्लिंग**	शांति	**स्त्रीलिंग**
याद	**स्त्रीलिंग**	दानशीलता	**स्त्रीलिंग**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) राजा हरिश्चंद्र इक्ष्वाकु वंश का राजा था। उनकी सत्यवादिता, परोपकार दान और त्याग की चर्चा सर्वत्र थी।

(ख) महर्षि विश्वामित्र ने महाराजा हरिश्चंद्र से दान में उनका संपूर्ण राज्य माँगा।

(ग) राजा ने महर्षि विश्वामित्र की दक्षिणा का प्रबंध स्वयं को बेचकर किया।

(घ) तारामती ने अपने पुत्र का अंतिम संस्कार करने के लिए अपनी साड़ी का आधा भाग फाड़ कर के रूप दिया।

(ङ) विश्वामित्र ने हरिश्चंद्र से कहा, ''तुम्हारी परीक्षा ली जा रही थी कि तुम किस सीमा तक सत्य और धर्म का पालन कर सकते हो।''
विश्वामित्र ने हरिश्चंद्र और तारामती के धैर्य, दानशीलता और सत्यवादिता की बहुत प्रशंसा की।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) उनकी **सत्यवादिता** परोपकार, **दान** और त्याग की चर्चा सर्वत्र थी।

(ख) राजा को श्मशान घाट के मालिक कालू नामक **डोम** ने खरीद लिया।

(ग) विश्वामित्र ने हरिश्चंद्र और तारामती के धैर्य, **दानशीलता** और सत्यवादिता की बहुत प्रशंसा की।

(घ) चंद्र टरै, सूरज टरै, टरै जगत **व्यवहार** ।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)।

IV. किसने, किससे कहा?

उत्तर– (क) **गुरु विश्वामित्र** ने **हरिश्चंद्र** से

(ख) **हरिश्चंद्र** ने **तारामती** से

(ग) **विश्वामित्र** ने **हरिश्चंद्र** से

(घ) **विश्वामित्र** ने **हरिश्चंद्र** से

V. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

उत्तर–

परोपकार	—	हमे हमेशा **परोपकार** करना चाहिए।
सर्वत्र	—	राजा हरिशचंद्र की सत्यवादिता, परोपकार, दान और त्याग की चर्चा **सर्वत्र** थी।
राजकोष	—	राजा ने मंत्री से **राजकोष** से धन मँगवाया।
ग्रहण	—	आज शाम चंद्र **ग्रहण** पड़ेगा।
विरुद्ध	—	मैं अपने मालिक की आज्ञा के **विरुद्ध** कुछ भी नहीं कर सकता।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

पंच परमेश्वर

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी।

(ख) रजिस्ट्री होते ही खालाजान की खातिरदारियों पर रोक इसलिए लग गई क्योंकि खालाजान की सारी जायदाद जुम्मन के नाम हो चुकी थी।

(ग) समझू साहू और अलगू चौधरी के बीच झगड़े का कारण अलगू चौधरी द्वारा समझू साहू को उधार बेचा गया एक बैल था।

(घ) न्याय के आसन पर बैठकर व्यक्ति के अंदर न्यायप्रियता का भाव पैदा होता है; क्योंकि उसके अंदर अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने का भाव आ जाता है।?

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में

(ख) जुम्मन शेख के

(ग) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी के

IV. निम्नलिखित मुहावरों का उनके सही अर्थों से मेल करो—

उत्तर–

(क) दिल का मैल धुल जाना	(iii) मन साफ हो जाना
(ख) कलेजा धक्-धक् करना	(i) अधिक घबरा जाना
(ग) सिर-माथे चढ़ाना	(iv) खुशी से स्वीकार करना
(घ) मुहर लग जाना	(ii) पक्का हो जाना

V. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो–

उत्तर– निष्ठुर— जुम्मन सेठ भी **निष्ठुर** हो गए थे।

अटल विश्वास— जुम्मन और अलगू दोनों दोस्तों में **अटल विश्वास** था।

अवसर— **अवसर** मिलते ही बिल्ली ने चूहे को पकड़ लिया।

मैल— जुम्मन और अलगू के दिलों का **मैल** आपसी समझौते से धुल गया।

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो—

उत्तर– (क) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी को एक-दूसरे पर अटल विश्वास था क्योंकि इस मित्रता का जन्म उसी समय हुआ था, जब दोनों बालक ही थे और जुम्मन के पिता जुमराती उन्हें शिक्षा प्रदान करते थे।

(ख) जुम्मन की खाला के प्रति जुम्मन की पत्नी का व्यवहार बहुत कठोर था।

(ग) बूढ़ी खाला ने पंचों से विनती की, ''पंचो, आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भानजे जुम्मन के नाम लिख दी थी। जुम्मन ने रोटी-कपड़ा देना कबूल किया था। साल भर तो मैंने रो-धोकर इसके साथ काटा, पर अब सहा नहीं जाता। मुझे न पेट भर रोटी मिलती है, न तन पर कपड़ा। मैं बेसहारा हूँ। तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह चलूँ। मैं पंचों की बात सिर-माथे चढ़ाऊँगी।''

(घ) अलगू चौधरी ने सरपंच चुने जाने पर जुम्मन से कहा, ''शेख जुम्मन! हम-तुम पुराने दोस्त हैं, मगर इस समय तुम और बूढ़ी खाला दोनों हमारी निगाह में बराबर हो।''

(ङ) समझ साहू द्वारा जुम्मन को सरपंच बनाने का फैसला इसलिए किया गया क्योंकि लोगों ने साहू जी को समझाया, ''भाई, पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाए, उसे स्वीकार कर लो।'' साहू जी राजी हो गए तथा अलगू ने भी हामी भर ली।

उसी वृक्ष के नीचे पंचायत शुरू हुई। रामधन ने कहा, ''चौधरी, बोलो, किसको पंच मानते हो?'' अलगू ने कहा, ''समझू साहू ही चुन लें।''

समझू खड़े हुए और कड़क कर बोले, ''मेरी ओर से जुम्मन शेख।'' जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू का कलेजा 'धक्-धक्' करने लगा। फिर भी उन्होंने कहा, ''ठीक है, मुझे स्वीकार है।''

(च) सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उन्होंने सोचा, 'मैं इस समय न्याय के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। सत्य से जौ भर भी टलना मेरे लिए उचित नहीं है।'

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) एक को दूसरे पर **अटल** विश्वास था।
(ख) जुम्मन ने **लंबे-चौड़े** वायदे करके वह **जायदाद** अपने नाम लिखवा ली थी।
(ग) जुम्मन शेख ने पहले से ही सारा **प्रबंध** कर रखा था।
(घ) अलगू चौधरी ने **जुम्मन** से जिरह शुरू की।
(ङ) मित्रता की **मुरझाई** हुई लता फिर से **हरी** हो गई।

III. उचित मेल मिलाओ—

उत्तर–

(क)	अलगू के फैसले की	(i)	आठों पहर खटकने लगा।
(ख)	''चौधरी, बोलो,	(ii)	पंचायत हुई।
(ग)	पंचों ने दोनों से	(iii)	किसको पंच मानते हो?''
(घ)	उसी वृक्ष के नीचे	(iv)	सवाल-जवाब शुरू किया।
(ङ)	जुम्मन को यह फैसला	(v)	सभी लोग प्रशंसा कर रहे थे।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

5 ओणम

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) केरल राज्य का प्रमुख त्योहार ओणम है।
(ख) केरल की जनभाषा मलयालम है।
(ग) भगवान विष्णु ने महाबली को वर्ष में एक बार केरल आकर अपनी प्रजा को देखने की अनुमति प्रदान कर दी?
(घ) ओणम के त्योहार पर कई प्रकार के स्वादिष्ट पकवान बनाए जाते हैं, जिनमें चावल, दाल-पापड़, साँभर, खिचड़ी, उप्पेरी, पायसम आदि मुख्य हैं।
(ङ) ओणम त्योहार हमें भाईचारे, सुख-समृद्धि और एकता का संदेश देता है।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) उसे डर था कि कहीं महाबली उसका सिंहासन न छीन लें।
(ख) वे देवताओं को महाबली के शासन से मुक्त करना चाहते थे।
(ग) श्रावण के महीने को।
(घ) केले के पत्ते पर भोजन करने को।
(ङ) सिर पर मटके रखे हुए।

IV. निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में बदलकर लिखो—

उत्तर–

नारी	**नारियाँ**	रानी	**रानियाँ**	गाथा	**गाथाएँ**
स्त्री	**स्त्रियाँ**	तपस्या	**तपस्याएँ**	प्रतियोगिता	**प्रतियोगिताएँ**
आँख	**आँखें**	लता	**लताएँ**	बात	**बातें**
नौका	**नौकाएँ**	खुशी	**खुशियाँ**	रात	**रातें**
कहानी	**कहानियाँ**	पुस्तक	**पुस्तकें**	गाय	**गायें**

V. निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर नया शब्द बनाओ—

उत्तर–

व्यापार	**व्यापारिक**	परिवार	**पारिवारिक**	इच्छा	**ऐच्छिक**
व्यवसाय	**व्यवसायिक**	परस्पर	**पारस्परिक**	दिन	**दैनिक**
समय	**सामयिक**	संसार	**सांसारिक**	अर्थ	**आर्थिक**
नगर	**नागरिक**	न्याय	**न्यायिक**	धर्म	**धार्मिक**
व्यवहार	**व्यवहारिक**	वेद	**वैदिक**	पक्ष	**पाक्षिक**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) केरल राज्य में ओणम का त्योहार मनाया जाता है।

(ख) ओणम त्योहार मनाने के विषय में एक कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि किसी समय केरल क्षेत्र में महाबली नामक राजा राज्य करते थे। वे बहुत शक्तिशाली राजा थे। उनकी राजधानी महाबलीपुरम थी। वे भक्त प्रह्लाद के पौत्र थे और उनकी तरह ही धार्मिक स्वभाव के थे। पृथ्वी, आकाश और पाताल पर उन्हीं का राज्य था। देवताओं को महाबली का इतना शक्तिशाली होना पसंद न था। उनका राजा इंद्र सदैव इस बात से भयभीत रहता था कि कहीं महाबली उसका सिंहासन न छीन लें। वह दूसरे देवताओं को साथ लेकर विष्णु भगवान के पास गया और उनसे प्रार्थना की, ''प्रभु! राजा महाबली के शासन से देवताओं को मुक्त कीजिए।''

(ग) ओणम का त्योहार लगातार पाँच दिन तक मनाया जाता है। इसका दूसरा दिन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। इसे 'तिरुओणम' कहते हैं। पहले दिन सभी लोग अपने घरों की पुताई, झाड़-पौंछ और आस-पास की पुताई करते हैं। रंग-बिरंगे फूलों की सुंदर गोलाकार आकृतियाँ बनाई जाती हैं, जिन्हें 'पूक्कलम' कहते हैं।

(घ) ओणम पारिवारिक मिलन और पारस्परिक सहयोग का त्योहार है। यह हमें भाई-चारे, एकता और सुख-समृद्धि का संदेश देता है।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) ओणम **केरल** राज्य का प्रमुख त्योहार है।

(ख) ओणम उल्लास **और समृद्धि** का त्योहार है।

(ग) महाबलि प्रजा को अपनी **संतान मानते** थे।

(घ) नौका-दौड़ का दृश्य बड़ा **आकर्षक** होता है।

(ङ) ओणम के अवसर पर किए जाने वाले नृत्य को **कैकोट्टिटली** नृत्य भी कहा जाता है।

III. निम्नलिखित वाक्यों में आए रंगीन शब्दों के विशेषण-भेद लिखो—

उत्तर– (क) गुणवाचक विशेषण (ख) गुणवाचक विशेषण (ग) संख्यावाचक विशेषण

(घ) परिमाणवाचक विशेषण (ङ) सार्वनामिक विशेषण।

IV. निम्नलिखित वाक्यों में आए कारक चिह्नों के नाम लिखो—

उत्तर– (क) अधिकरण कारक (ख) संबंध कारक (ग) संप्रदान कारक

(घ) कर्त्ता कारक (ङ) संबंध कारक

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

I. भगवान विष्णु के दस अवतार माने गए हैं। अपने अध्यापक/अध्यापिका/अभिभावक से जानकारी करके इनके नाम लिखो।

उत्तर–

मत्स्य	कल्कि
कूर्म	बुद्ध
वाराह	परशुराम
वामन	राम
कृष्ण	नरसिंह

II. भारत देश के विभिन्न त्योहारों की एक सूची तैयार करो।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. नीचे कुछ त्योहारों के चित्र दिए गए हैं, इन्हें पहचानकर नीचे इनके नाम लिखो।

उत्तर–

रक्षाबंधन

दीपावली

ईद

दशहरा

6 हमारा प्यारा हिंदुस्तान

अभ्यास

प्रथम भाग : विकासात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) कवि के अनुसार हिंदुस्तान कहकर हम अपने देश का मान करते हैं।

(ख) कविता में के देश के लिए प्राण देने के लिए कहा गया है।

(ग) सत्य के मार्ग पर मर मिटने में बड़ा आनंद आता है।

(घ) भारत की संतान सभी कार्य पूरे कर सकती है।

(ङ) कविता का मुख्य संदेश यह हे कि हम अपने देश को स्वतंत्र बनाएगे नहीं तो अपने प्राण दे देंगे।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✓)।

IV. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत कविता में से छाँटकर लिखो—

उत्तर–

शब्द	**तुकांत**	**शब्द**	**तुकांत**
शान	**मान**	तुम्हारा	**हमारा**
तन	**मन**	हीन	**दीन**
नित	**चित**	जहान	**महान**
नशा	**आशा**	सुख	**दुःख**

V. नीचे दिए गए चक्र में निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द छाँटकर लिखो–

उत्तर–

अपमान	—	**सम्मान**	पवित्र	—	**अपवित्र**
स्वतंत्र	—	**परतंत्र**	मलिन	—	**स्वच्छ**
बलवान	—	**बलहीन**	योग्य	—	**अयोग्य**
सत्य	—	**असत्य**	उच्च	—	**निम्न**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) कविता के आधार पर भारतवासियों में अग्रलिखित गुणों का समावेश होना आवश्यक है; एकता, समानता, सत्यता, स्वतंत्रता आदि।

(ख) भारत देश की रक्षा न होने पर प्राण दे देने को कहा गया है।

(ग) सत्य मार्ग पर मिटने में महान आनंद (सौख्य) होता है।

(घ) देश की दीन दशा को देखकर भारतवासियों ने देश को स्वतंत्र करने की ठान लेनी चाही।

II. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट करो—

उत्तर– करें क्यों .... देना प्राण।।

भावार्थ—एकता बलशाली है अर्थात् एकता में हमेशा शक्ति होती है। हमें निर्बलता का ध्यान कभी नहीं करना चाहिए। कवि कहता है कि यदि हम भारत की रक्षा न कर पाए तो हम अपने प्राण दे देंगे।

III. कविता की वे पंक्तियाँ लिखो, जिनमें—

उत्तर– (क) करें क्यों निर्बलता का ध्यान।
एकता सबसे है बलवान।।
(ख) न होगा यदि भारत का त्राण।
हाथ में तो है देना प्राण।।
(ग) नहीं होने पावेगा म्लान।
देश के हित होंगे बलिदान।।
(घ) देश प्रेम पर 'प्रेमी' सब कुछ, कर देंगे बलिदान।
या स्वतंत्र जन ही बन लेंगे, या हम देंगे प्राण।।

IV. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—

उत्तर– मान— हमें **मान**-अपमान से ऊपर उठकर जीवन जीना चाहिए।
देह— व्यायाम द्वारा सभी अपनी **देह** को हष्ट-पुष्ट रख सकते हैं।
निर्बलता— एकता में शक्ति होती है। अत: हमें **निर्बलता** का कभी ध्यान नहीं करना चाहिए।
त्राण— हम अपने देश के **त्राण** के लिए प्राण भी दे सकते हैं।
बलिदान— हमें अपने देश के लिए **बलिदान** हो जाना चाहिए।
स्वतंत्र— हमारा देश एक **स्वतंत्र** देश है।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

I. हमारा भारत देश कब आजाद हुआ तथा इस दिन कौन-सा उत्सव मनाया जाता है?

उत्तर– हमारा देश 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ था। इस उत्सव को स्वतंत्रता दिवस के नाम से मनाया जाता है।

II. प्रमुख वीर-वीरांगनाओं के नामों की एक सूची तैयार करो जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया था।

उत्तर– प्रमुख वीर-वीरांगनाओं के नाम निम्नलिखित हैं—
रानी लक्ष्मीबाई, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, मंगल पांडे, महात्मा गांधी, मदनमोहन मालवीय, तांत्या टोपे आदि।

आत्मबोध

अभ्यास

प्रथम भाग : विकासात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) आत्मानंद एक साधु था।
(ख) साधु में लालच का अवगुण था।
(ग) प्राचीन भारत की प्रथा थी कि संन्यासी तीर्थों में एकत्रित जन-समुदाय को उपदेश देते थे।
(घ) साधु ने अपना धन बालू में दो हाथ गडढा खोदकर छिपाया।
(ङ) साधु को आत्मबोध इस प्रकार हुआ मैं तो संन्यासी हूँ। मुझे तो धन के लोभ में पड़ना ही नहीं चाहिए। भगवान ने मुझे शिक्षा देने के लिए ही यह सब किया है।'
इस आत्मबोध से आत्मानंद का सारा दु:ख दूर हो गया।
(च) नहीं, यह अवगुण उसके लिए ठीक नहीं था क्योंकि एक संन्यासी के लिए लालच करना या धन का लोभ करना व्यर्थ होता है।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) गंगा नदी के (ख) धन का लालच करना (ग) बदरीनाथ
(घ) शिवलिंग (ङ) पुरुषदत्त

IV. उचित मेल मिलाकर वाक्यांशों को पूरा करो—

उत्तर–

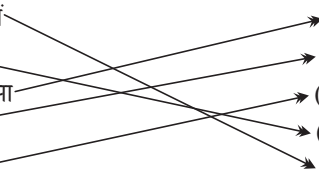

(क) मुझे धन के लोभ में	(v) नहीं पड़ना चाहिए।
(ख) आत्मानंद ने	(i) एक अद्भुत उपाय सूझा।
(ग) आत्मानंद को सहसा	(iii) दृष्टि दौड़ाई।
(घ) वह स्थान	(ii) जन-शून्य था।
(ङ) उसने चारों ओर	(iv) बालू में दो हाथ गहरा गड्ढा खोदा।

VI. निम्नलिखित वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलकर लिखो—

उत्तर– (क) क्या मार्ग में साधु को तीर्थयात्री भी मिलते रहे।
(ख) क्या उसे अपने धन के विषय में चिंता सताने लगी।
(ग) गंगा के किनारे सैकड़ों शिवलिंग कैसे बने थे?
(घ) क्या आत्मानंद बहुत देर तक शिवलिंगों के मेले को देखता रहा?
(ङ) मुझे तो धन के लोभ में क्यों नहीं पड़ना चाहिए?

द्वितीय भाग रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) आत्मानंद ने घर-परिवार का त्याग कर दिया था।
(ख) उस साधु में अनेक गुण थे; जैसे दूसरों की सहायता करना, प्राणिमात्र पर दया करना आदि। लेकिन उसमें एक बहुत बड़ा अवगुण भी था, वह था—लालच। उसने बहुत-सी स्वर्ण-मुद्राएँ अपने पास जमा कर रखी थीं। न तो वह उन्हें किसी को देता था और न स्वयं ही उस धन का कोई उपयोग करता था।
(ग) आत्मानंद सोचने लगा कि मेरी आयु बहुत हो गई है। पता नहीं कब मृत्यु का ग्रास बनना पड़ जाए। अतएव एक बार सभी तीर्थों की यात्रा कर लेनी चाहिए। इसी बहाने कुछ परोपकार भी हो जाएगा।
(घ) अपने धन के विषय में चिंता होने लगी। वह समझ नहीं पा रहा था कि धन का क्या करे? कहाँ रखे? साथ ले चलने में तो डर था कि डाकू धन के लोभ से कहीं उसके प्राण ही न ले लें।
(ङ) आत्मानंद ने बालू में दो हाथ गहरा गड्ढा खोदा, फिर स्वर्ण-मुद्राओं की थैली निकालकर चुपचाप उसमें रखी। ऊपर से बालू से उसे पाट दिया। फिर उसके ऊपर गंगा के काले-काले पत्थर चुनकर बालू और पत्थरों से ऊँचा-सा शिवलिंग बनाया, पुष्प आदि से उसकी पूजा की। इसके बाद वह खुशी-खुशी आगे तीर्थयात्रा पर बढ़ गया।
(च) वह सोचने लगा, 'देखो, किसी ने ठीक ही कहा है कि वह धन नष्ट हो जाता है जिससे हम न तो दूसरों का भला करते हैं, न अपने लिए ही उसका उपयोग करते हैं। मैं तो संन्यासी हूँ। मुझे तो धन के लोभ में पड़ना ही नहीं चाहिए। भगवान ने मुझे शिक्षा देने के लिए ही यह सब किया है।'

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) उसने बहुत-सी **स्वर्ण-मुद्राएँ** अपने पास जमा कर रखी थीं।
(ख) एक दिन आत्मानंद सोचने लगा कि मेरी **आयु** बहुत हो गई।
(ग) एक बार सभी **तीर्थों** की यात्रा कर लेनी चाहिए।
(घ) लगभग एक **महीने** बाद आत्मानंद तीर्थयात्रा से लौटा।
(ङ) भगवान ने मुझे **शिक्षा** देने के लिए ही यह सब किया है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✗) (च) (✓)।

IV. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

उत्तर– अपरिचित— साधु के लिए वह स्थान **अपरिचित** था।
तीर्थ यात्रा— श्रवणकुमार ने अपने माता-पिता को **तीर्थ-यात्रा** करवाई।
जन-कल्याण— सज्जन लोग **जन-कल्याण** में विश्वास रखते हैं।
उत्तरदायित्व— हमें अपना **उत्तरदायित्व** कभी नहीं भूलना चाहिए।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

I. धन का सदुपयोग किस प्रकार करना चाहिए? अपने विचार लिखो।

उत्तर– धन का सदुपयोग हमें दूसरों की भलाई करने में, परोपकार करने में, दान करने में तथा जरूरत मंदों की मदद करने में करना चाहिए।

II. 'लोभ का फल' इस शीर्षक से कोई कहानी पढ़ो और उसमें निहित शिक्षा को लिखो।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

8 गुलीवर की यात्रा

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) गुलीवर ने नींद खुलने पर अपने आपको पतले-पतले धागों से जकड़ा हुआ पाया।

(ख) गुलीवर ने लिलिपुट निवासियों को इशारे से यह समझाया कि उसे भूख लग रही है।

(ग) एक दिन राजा ने गुलीवर से कहा, ''हमारे पड़ोसी देश ब्लेफुस्कू के सम्राट ने बड़ा शक्तिशाली जहाजी बेड़ा तैयार कर लिया है। वह जल्दी ही हमारे देश लिलिपुट पर आक्रमण करेगा।''

(घ) गुलीवर ने स्वदेश जाने के लिए राजा से आज्ञा माँगी।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) छह: इंच (ख) सांकेतिक भाषा से (ग) मंदिर में (घ) ब्लेफुस्कू

IV. सही मेल मिलाओ—

उत्तर–

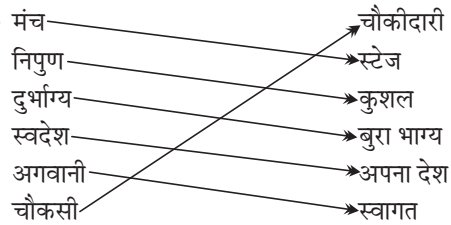

V. रंगीन छपे शब्दों के स्थान पर इनके पर्यायवाची शब्द लिखकर वाक्य पुन: लिखो—

उत्तर– (क) **चंद्रमा** निकलने पर चारों तरफ **चंद्रिका** फैल जाती है।

(ख) **वृक्ष** पर रसीले **आम** लगे थे।

(ग) **उपवन** में **मयूर** नाच रहा है।

(घ) वह **अहर्निश** मेहनत करता है।

(ङ) **देवता दैत्यों** से श्रेष्ठ है।

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो—

उत्तर– (क) गुलीवर कोशिश करने पर भी उठ नहीं पाया क्योंकि उसे धागों से बाँध दिया गया था। उसके अचरज की सीमा न रही, जब उसने देखा कि उसकी छाती पर एक छोटा-सा आदमी जिसकी ऊँचाई मुश्किल से छह इंच रही होगी, खड़ा हुआ था।

(ख) खाना खाने के बाद गुलीवर को नींद इसलिए आने लगी थी क्योंकि वहाँ के निवासियों ने उसके खाने में नींद की गोलियाँ मिला दी थीं। इन गोलियों के सेवन से गुलीवर अपना होश खो बैठा।

(ग) मंदिर गुलीवर के लिए आदर्श इसलिए था; क्योंकि उसका द्वार चार फुट ऊँचा और दो फुट चौड़ा था। द्वार में फाटक लगे थे। फाटक में खिड़कियाँ बनी थीं। एक खिड़की में से नब्बे जंजीर ले जाई गई थीं जिनसे गुलीवर के पैर को बाँधकर उनमें तीस ताले लगाए गए।
जब वहाँ के निवासियों को यकीन हो गया कि गुलीवर भाग नहीं सकता, तो उन्होंने उन रस्सों को काट दिया, जिनसे उसे बाँधा गया था। मंदिर के पास गुलीवर को देखने के लिए हजारों लोगों की भीड़ जमा थी।

(घ) गुलीवर को लिलिपुट की भाषा एक विशेषज्ञ ने सिखाई।

(ङ) ब्लेफुस्कू के सैनिकों के तीर बरसाने पर भी गुलीवर का कुछ नहीं हुआ, क्योंकि उसने चमड़े की जैकेट पहन रखी थी और आँखों पर चश्मा था।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) गुलीवर एक **जहाज** पर यात्रा कर रहा था।
(ख) गुलीवर **तैरकर** किसी तरह किनारे पहुँचा।
(ग) गुलीवर को बड़ी जोर की **भूख** लग आई थी।
(घ) राजा ने गुलीवर के पैर की **जंजीरें** खुलवा दीं।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)।

IV. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए दिए गए ठीक शब्द के सामने (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर–

(क) सौ वर्ष का समय	**शताब्दी**	दशक
(ख) पहले जन्म लेने वाला	**अग्रज**	अनुज
(ग) जो कभी बूढ़ा न हो	**अजर**	अमर
(घ) अधिक बोलने वाला	अल्पभाषी	**वाचाल**
(ङ) जहाँ जाना आसान न हो	सुगम	**दुर्गम**

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

चाटुकार मंत्री

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) जिन लोगों का कोई सिद्धांत नहीं होता; उन्हें 'बेपेंदी का लोटा' कहते हैं।
(ख) राजा की चाटुकारी मंत्री करता था।
(ग) राजा ने चींटी की चाल से चलने वाला हाथी को बताया।
(घ) वीरों की सवारी घोड़े को बताया गया है।
(ङ) नहीं राजा और मंत्री गंगा स्नान के लिए नहीं गए क्योंकि उन्हें कोई उपयुक्त सवारी नहीं मिली थी।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) चाटुकार (ख) गंगा-स्नान के लिए (ग) कोई भी नहीं

IV. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो—

उत्तर–

तट	**किनारा**	भद्दा	**कुरूप**	बेहतर	**अपेक्षाकृत अच्छा**
उत्तम	**श्रेष्ठ**	सदा	**हमेशा**	तनिक-सा	**थोड़ा-सा**

V. निम्नलिखित शब्दों का लिंग-निर्णय करो—

उत्तर–

गंगा जी	**स्त्रीलिंग**	मंत्री	**पुल्लिंग**	हाथी	**पुल्लिंग**
सवार	**पुल्लिंग**	महाराज	**पुल्लिंग**	सवारी	**स्त्रीलिंग**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) जिन लोगों का कोई सिद्धांत नहीं होता, वे पल-पल बात बदलते रहते हैं। आज एक बात, कल दूसरी बात। ऐसे लोगों को बेपेंदी का लोटा कहा जाता है।
(ख) मंत्री सदा ही राजा की चाटुकारी करता रहता था। वह राजा की 'हाँ' में 'हाँ' और 'ना' में 'ना' किया करता था।
(ग) राजा ने कहा, मंत्री जी, गंगा जी तो बहुत दूर हैं। चींटी की चाल से चलता हाथी महीनों में गंगा तट पहुँचेगा। अत: राजा ने हाथी की सवारी करने से मना किया।
(घ) राजा को ऊँट की सवारी अधिक सुविधाजनक नहीं लगी, क्योंकि चलते हुए ऊँट इतना हिलता है कि कमर टूटने तथा कूबड़ निकल आने की आशंका रहती है। यह कहकर राजा ने ऊँट के लिए भी मना कर दिया।
(ङ) किसी उपयुक्त सवारी का निर्णय न हो पाने के कारण राजा गंगा स्नान को नहीं गया।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) जिन लोगों का कोई सिद्धांत नहीं होता, वे पल-पल **बात** बदलते रहते हैं।
(ख) मंत्री सदा ही राजा की **चाटुकारी** करता था।
(ग) सबसे बड़ा मुहूर्त तो राजा की **इच्छा** है।
(घ) हाथी से अधिक **सुस्त** जानवर दूसरा नहीं है।
(ङ) मैं तो **गधे** और ऊँट में कोई भेद नहीं मानता।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✓)।

IV. लिखिए, किसको क्या कहते हैं?

उत्तर– (क) बेपेंदी का लोटा (ख) ऊँट (ग) साक्षर
(घ) निशाचर (ङ) भारवाहक।

V. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

उत्तर– सिद्धांतहीन — कुछ लोगों का कोई सिद्धांत नहीं होता है। अत: वे **सिद्धांतहीन** होते हैं।
व्यतीत — राम ने अपना सारा समय भजन-कीर्तन में **व्यतीत** किया।
मुहूर्त — सबसे बड़ा **मुहूर्त** तो राजा की इच्छा है।
अनुचर — मोहन का **अनुचर** अपने गाँव गया हुआ है।

तृतीय भाग विविध मूल्यांकन

I. छात्र स्वयं करें।

II. हम अपने स्वाभिमान की रक्षा कैसे कर सकते हैं? इसकी जानकारी अपने अध्यापक/अध्यापिका से प्राप्त करो।

उत्तर– हम अपने स्वाभिमान की रक्षा चाटुकारिता अर्थात् (बिना विचारे किसी की भी हाँ में हाँ मिलाना) न करके कर सकते हैं।

ठुकरा दो या प्यार करो

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) कवयित्री ईश्वर से उपासक के विषय में कहती हैं कि देव तुम्हारे कई उपासक कई रंग की बहुमूल्य भेंट लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं।
(ख) ईश्वर की पूजा करने के लिए कवयित्री के पास धूप, दीपक, नैवेद्य, झाँकी का शृंगार और फूलों का हार चीजें नहीं हैं।
(ग) कवयित्री ईश्वर के चरणों में स्वयं को अर्पित करने आई है।
(घ) नहीं ईश्वर बहुमूल्य भेंटों से प्रसन्न नहीं होते हैं क्योंकि उनके (ईश्वर) के लिए सच्चे हृदय का निश्छल प्रेम ही बहुमूल्य भेंट हैं।
(ङ) इस कविता के माध्यम से कवयित्री यह कहना चाहती है कि उसके पास स्वयं के सच्चे हृदय के अलावा कुछ भी चढ़ाने के लिए नहीं है। अत: ईश्वर उसे चाहे स्वीकार करे या ठुकरा दे।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) हृदय का निश्छल प्यार (ख) उपर्युक्त दोनों (ग) पूजा और पुजापा
(घ) उन्मत्त प्रेम

IV. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखो—

उत्तर–

मणि	**मणियाँ**	पुजारिन	**पुजारिनों**
मैं	**हम**	विधि	**विधियाँ**
फूल	**फूलों**	नाथ	**नाथों**
वस्तुएँ	**वस्तु**	सेवा	**सेवाएँ**
झाँकी	**झाँकियाँ**	मंदिर	**मंदिरों**

V. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो—

उत्तर–

देव	**देवता**	उपासक	**भक्त**
हृदय	**अन्तरात्मा**	वाणी	**बोली**
फूल	**पुष्प**	प्रेम	**प्यार**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) ईश्वर से एक पुजारिन प्रार्थना कर रही है।
(ख) भक्त ईश्वर को पुण्प, धूप-दीप, झाँकी का श्रृंगार, गले का हार आदि भेंट चढ़ाते हैं।
(ग) कीर्तन करने के लिए स्वर में माधुर्य तथा मन का भाव प्रकट करने के लिए वाणी में चातुर्य नहीं है।
(घ) ईश्वर के लिए धन-दौलत से ज्यादा सच्चे हृदय से की गई पूजा का महत्त्व है।
(ङ) कवयित्री ईश्वर को भेंट के रूप में स्वयं को अर्पित करना चाहती है।

II. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✗)।

III. कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो—

उत्तर– (क) धूम-धाम **से साजबाज से, वे मंदिर में आते हैं।**
मुक्तामणि **बहुमूल्य वस्तुएँ, लाकर तुम्हें** चढ़ाते हैं।।
(ख) कैसे **करूँ कीर्तन, मेरे स्वर में है माधुर्य** नहीं।
हाय! **गले में पहनाने को, फूलों का भी हार** नहीं।।
(ग) चरणों **पर अर्पित है, इसको चाहो तो स्वीकार** करो।
यह **तो वस्तु तुम्हारी ही है, ठुकरा दो या प्यार** करो।

IV. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखो—

उत्तर– (क) धूप-दीप..... हार नहीं।।

अर्थ—पुजारिन भगवान से प्रार्थना करती हुई कहती है कि मेरे पास धूप-दीप, भोग व प्रसाद नहीं है, और न ही भगवान की झाँकी सजाने के लिए सजावट का सामान है। न ही पुजारिन के पास भगवान को गले में पहनाने के लिए फूलों का हार ही है। अर्थात् पूजारिन के पास भगवान को भेंट चढ़ाने के लिए कुछ भी पान-प्रसाद नहीं है।

(ख) पूजा ..... समझो।।

अर्थ—इस कविता के माध्यम से पुजारिन पूजा और पुजापा अपने आप को ही बता रही है। दान-दक्षिणा और किसी भी प्रकार की भेंट इसी भिखारिन (पुजारिन) को ही मानें। अर्थात् पुजारिन कहती है कि उसके पास न तो दान देने के लिए दक्षिणा है और न ही पूजा की कोई भी सामग्री है अत: आपसे (भगवान) से अनुरोध है कि सभी सामग्री न होते हुए उसे (पुजारिन को) ही समस्त सामग्री समझकर स्वीकार करें।

V. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—

उत्तर– उपासक— भगवान अपने **उपासकों** का साथ कभी नहीं छोड़ता हैं।
वाणी— हमें अपनी **वाणी** में हमेशा मधुरता रखनी चाहिए।
स्वीकार— भगवान अपने भक्तों द्वारा सच्चे मन से दी गई सभी भेंटों को **स्वीकार** करते हैं।
पुजारिन— **पुजारिन** भगवान को स्वयं (पुजारिन) के हृदय को भेंट कर रही है।
चरण— हमें अपने माता-पिता के **चरण** अवश्य छूने चाहिए।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

I. ईश्वर भक्त प्रह्लाद के विषय में अपने अध्यापक/अध्यापिका से जानकारी प्राप्त करके अपने शब्दों में लिखो।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

II. संसार की समस्त वस्तुएँ हमें ईश्वर ने प्रदान की हैं। तो क्या ईश्वर इन प्रदत्त वस्तुओं से प्रसन्न हो जाते हैं। जानकारी प्राप्त करके लिखो।

उत्तर– संसार की समस्त वस्तुएँ हमें ईशवर ने प्रदान की है। फिर भी श्रद्धा के भूखे भगवान को सप्रेम कोई भी भेंट चढ़ाने पर वह अवश्य प्रसन्न हो जाते हैं। क्योंकि भगवान हमेशा सच्चे प्रेम के भूखे होते हैं। बहुमूल्य वस्तुएँ उनके लिए व्यर्थ हैं।

11 मोह-भंग

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) यह घटना कुरुक्षेत्र नामक स्थान पर हुई थी।
(ख) अर्जुन के सामने पितामह भीष्म, गुरु द्रोण और मामा शल्य खड़े थे।
(ग) अर्जुन के सारथी भगवान श्रीकृष्ण थे।
(घ) अर्जुन युद्ध करने से इसलिए मना कर रहा था क्योंकि उसके सामने सभी स्वजन युद्ध के लिए खड़े थे।
(ङ) अर्जुन को सही मार्ग दिखाने के लिए श्रीकृष्ण ने उसे धर्मपालन का संदेश किया।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) कुरुक्षेत्र के (ख) श्रीकृष्ण (ग) स्वजनों का
(घ) वीर (ङ) गांडीव

IV. अन्य शब्द बनाओ—

द्ध	शुद्ध	**युद्ध**	**क्रुद्ध**	**अशुद्ध**
प्र	प्रदान	**संप्रदान**	**प्रत्यक्ष**	**प्रचंड**
च्छ	स्वच्छ	**इच्छा**	**अच्छा**	**लच्छा**
त्य	कृत्य	**नृत्य**	**प्रत्यय**	**दैत्य**
क्त	रक्त	**वक्त**	**मुक्त**	**सूक्त**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) अर्जुन ने शत्रु पक्ष की ओर देखकर श्रीकृष्ण से कहा कि अरे, यह मैं क्या देख रहा हूँ! यहाँ तो पितामह भीष्म, गुरु द्रोण और मामा शल्य खड़े हैं। क्या इस युद्ध में विजय पाने के लिए मुझे अपने गुरुजनों और संबंधियों का ही वध करना होगा?
(ख) अर्जुन युद्ध न करने के पक्ष में यह तर्क दे रहा था किमैं यह युद्ध नहीं करूँगा। मैं अपने स्वजनों के वध के लिए गांडीव नहीं उठाऊँगा। मुझे ऐसी विजय नहीं चाहिए।
(ग) अर्जुन! जो अधर्म पर चलते हैं उनका नाश करना ही वीरों का धर्म है। जो क्षत्रिय यह नहीं करता, उसकी सर्वत्र निंदा होती है। आने वाली पीढ़ी कहेगी कि अर्जुन कायर था, उसने पाप को बढ़ावा दिया।
(घ) श्रीकृष्ण ने आत्मा के विषय में यह बताया कि मनुष्य की आत्मा अमर है। जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्र बदलकर नए वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा भी एक शरीर त्यागकर दूसरा शरीर धारण करती है।
(ङ) श्रीकृष्ण ने कहा सच्चा संन्यासी वह है जो अपने कर्त्तव्य का पालन करता है। वह किसी फल की इच्छा नहीं करता। ऐसा व्यक्ति ही ईश्वर को पा सकता है।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) भीष्म पितामह **शंखध्वनि** करते हैं।
(ख) रथ के सारथी **भगवान श्रीकृष्ण** हैं।
(ग) धर्म युद्ध में किसी प्रकार का **मोह** करना अच्छा नहीं होता।
(घ) अब मैं आपकी **आज्ञा** का पालन करूँगा।
(ङ) अर्जुन के बाण छोड़ते ही युद्ध-भूमि में घोर **नाद** छा गया।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✓)।

IV. निम्नलिखित वाक्यों में कौन-कौन से कारक चिह्नों का प्रयोग हुआ है। सभी के नाम लिखो—

उत्तर– (क) अधिकरण कारक (ख) कर्म कारक (ग) संबंध कारक
(घ) संप्रदान कारक (ङ) संबंध कारक।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

12 कलिंग-युद्ध का परिणाम

अभ्यास

प्रथम श्रृंग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) कलिंग राज्य में बड़े वीर और सदा सच बोलने वाले लोग रहते थे।

(ख) सम्राट् अशोक को कलिंग राज्य का स्वतंत्र रहना इसलिए खटक रहा था क्योंकि अशोक को यह प्रतीत होने लगा था कि इस राज्य के लोग कहीं विदेशी राजाओं के साथ मिलकर मौर्य साम्राज्य के लिए खतरा न बन जाएँ।

(ग) नहीं कलिंगराज ने अशोक की बात मानकर उससे मित्रता नहीं की क्योंकि वे किसी भी मूल्य पर अपनी स्वतंत्रता बेचना नहीं चाहते थे।

(घ) कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने निश्चय किया कि अब वह किसी भी देश पर सेनाओं द्वारा आक्रमण नहीं करेगा।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए—

उत्तर– (क) उपजाऊ (ख) कलिंग का (ग) प्रजा की भलाई के

(घ) शांति का

IV. निम्नलिखित शब्दों के विलोम चक्र में से ढूँढ़कर लिखिए—

उत्तर–	वीर	—	**कायर**	प्रेम	—	**घृणा**
	विशाल	—	**लघु**	सत्य	—	**असत्य**
	उन्नति	—	**अवनति**	दुर्गंध	—	**सुगंध**
	दिन	—	**रात**	विजय	—	**पराजय**

द्वितीय श्रृंग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो—

उत्तर– (क) कलिंग एक छोटा-सा राज्य था। वह राज्य गोदावरी और महानदी नदियों के बीच में बंगाल की खाड़ी के निकट था। इस राज्य के तीन ओर मौर्य साम्राज्य की सीमाएँ थीं और चौथी ओर सागर ठाठें मार रहा था। यहाँ के लोग बड़े वीर और सदा सच बोलने वाले थे। यह भूमि बड़ी उपजाऊ थी। यहाँ का व्यापार बड़ी दूर तक फैला हुआ था। यहाँ का वस्त्र-व्यापार उन्नति पर था। बारीक कपड़ा ढाके की मलमल, यहाँ का विश्व-प्रसिद्ध कपड़ा था। यहाँ के भूरे रंग के हाथी भी बहुत प्रसिद्ध थे।

(ख) सम्राट अशोक ने दूत द्वारा यह संदेश भिजवाया था कि ''अब भी चाहो तो युद्ध रुक सकता है, नहीं तो लाखों लोगों का रक्त व्यर्थ ही बह जाएगा। हम तुम्हारे राज्य पर शासन करने के लिए नहीं आए हैं; हम तो केवल मित्रता का हाथ चाहते हैं।''

(ग) अशोक के दूत की बात का कलिंगराज के दरबारियों ने यह कहकर उत्तर दिया कि महाराज! यह ''मौर्यवंश की चाल है। इतना बड़ा मौर्य साम्राज्य हमसे मित्रता गाँठना चाहता है, वो भी इतनी बड़ी सेना लेकर! यह धोखा है, छल है महाराज! वे हमें मिटाने आए हैं। जब तक हमारा एक भी आदमी जीवित है, जब तक हमारे शरीर में अंतिम साँस है, शत्रु से लड़ेंगे और उसे अपनी जन्मभूमि में नहीं घुसने देंगे।''

(घ) कलिंग-युद्ध के परिणाम ने सम्राट् अशोक के जीवन को ही बदल डाला, उसने निश्चय किया कि अब वह किसी भी देश पर सेनाओं द्वारा आक्रमण नहीं करेगा। परंतु प्रेम का संदेश लेकर सारे संसार को एक माला में पिरोएगा।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) कलिंग तीन ओर से **मौर्य साम्राज्य** से घिरा था।

(ख) गद्दी पर बैठने के **आठ** वर्ष पश्चात् अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया।

(ग) कलिंग-युद्ध में भयंकर **युद्ध** हुआ।

(घ) कलिंग-युद्ध की विनाशलीला देखकर अशोक ने **युद्ध** न करने का निर्णय लिया।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗)।

IV. किसने, किससे कहा?

उत्तर– (क) **सम्राट अशोक** ने **कलिंगराज** से
(ख) **दरबारियों** ने **कलिंगराज** से
(ग) **कलिंगराज** ने **दरबारियों** से
(घ) **सेनापति** ने **कलिंगराज** से

V. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—

उत्तर– साम्राज्य — मौर्य साम्राज्य एक विशाल **साम्राज्य** था।
उन्नति — कलिंग का वस्त्र-व्यापार **उन्नति** पर था।
मित्रता — मोहन और सोहन में बहुत गहरी **मित्रता** थी।
छल — वे **छल** से हमारा राज्य लेना चाहते थे।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

I. महान् सम्राट अशोक के विषय में कुछ पंक्तियों में अपने विचार लिखो।

उत्तर– महान् सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध में विजय प्राप्त करके अपना जीवन ही बदल डाला। उन्होंने भविष्य में कभी युद्ध न करने का निश्चय किया।

II. मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की थी? पता करके लिखो।

उत्तर– मौर्य साम्राज्य की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने की थी।

पर्यावरण-प्रदूषण

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) पर्यावरण की रचना वायु, जल, मिट्टी, पौधों, वृक्षों, पशुओं और मनुष्यों द्वारा होती है।
(ख) पर्यावरणीय असंतुलन प्रदूषण का कारक है।
(ग) प्रदूषण सारी दुनिया में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि द्वारा फैलता है।
(घ) पेड़-पौधे हमारे बहुत उपयोगी संगी-साथी हैं क्योंकि ये विषैली गैसों को पचाकर लाभदायक गैस छोड़ते हैं।
(ङ) प्रदूषण की रोकथाम करने हेतु हमें इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि सारे प्रदूषण का एकमात्र उपचार है विवेक का प्रयोग करते हुए मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करना।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ–

उत्तर– (क) उपरोक्त इन सभी के द्वारा।
(ख) इससे कार्बन मोनोक्साइड की काफी मात्रा उत्सर्जित होती है।
(ग) रेगिस्तानी क्षेत्रों में घनी आबादी वाले क्षेत्रों में
(घ) वे कार्बन डाइ-ऑक्साइड लेकर ऑक्सीजन छोड़ते है।

IV. इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के दो-दो शब्द बनाओ—

उत्तर– मानव	**मानवीय**	**मानवता**
उपयोग	**उपयोगी**	**उपयोगिता**
अधिक	**आधिक्य**	**अधिकता**
अनुकूल	**अनुकूलतम**	**अनुकूलता**
संभावना	**संभव**	**संभवतः**

V. प्रदूषण शब्द में 'प्र' उपसर्ग लगा है। उपसर्ग शब्दों से पहले लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, जैसे प्रबल (प्र + बल)। 'प्र' उपसर्ग का प्रयोग करते हुए चार शब्द लिखिए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

उत्तर– प्रयत्न = हमें हमेशा मुश्किलों का सामना करने का **प्रयत्न** करना चाहिए।
प्रयोग = मोहन अपने विद्यालय में भौतिक विज्ञान का **प्रयोग** करेगा।
प्रगति = मोहन हमेशा **प्रगति** के पथ पर ही चलता है।
प्रचार = सभी को सत्य का **प्रचार**-प्रसार करना चाहिए।

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो—

उत्तर– (क) पर्यावरण की रचना वायु, जल, मिट्टी, पौधों, वृक्षों, पशुओं और मनुष्यों द्वारा होती है। ये सभी पारस्परिक संतुलन बनाए रखने के लिए एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

(ख) कभी-कभी किसी कारणवश इनसे पर्यावरण में परिवर्तन आ जाता है। यदि इस परिवर्तन की प्रक्रिया का प्रकृति के साथ सामंजस्य न किया जाए तो पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। यह असंतुलन ही प्रदूषण का जनक है।

(ग) आज का युग औद्योगिक युग है। औद्योगीकरण के फलस्वरूप वायु प्रदूषण बहुत तेजी से बढ़ रहा है। उद्योगों में ऊर्जा पैदा करने व उसका उपयोग करने वाले संयंत्र लगे रहते हैं। इन संयंत्रों से गर्मी बहुत उत्पन्न होती है। इस प्रकार उद्योग जितना बड़ा होता है, ये संयंत्र भी उतने ही अधिक बड़े होते हैं और अधिक गर्मी फैलाते हैं।

(घ) कार्बन मोनोक्साइड के कारण रक्त-संचार में 5-10 प्रतिशत ऑक्सीजन कम हो जाती है। शरीर के ऊतकों को 25 प्रतिशत ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। ऑक्सीजन की तुलना में कार्बन मोनोक्साइड लाल रुधिर कोशिकाओं के साथ ज्यादा मिल जाती है। इससे यह हानि होती है कि ये कोशिकाएँ ऑक्सीजन को अपनी पूरी मात्रा में सँभालने में असमर्थ रहती हैं। मोटर वाहनों के धुएँ में टेट्राएथिल के अतिरिक्त सीसा भी होता है। अधिक मात्रा में लेने पर तो सीसा एक प्राणघातक विष है। कम मात्रा में लिए जाने पर भी यह आयुघातक होता है। इससे रक्तचाप भी बहुत बढ़ जाता है और शरीर में गुर्दे संबंधी रोग पैदा हो जाते हैं।

(ङ) वृक्षों का पर्यावरण संतुलन में बहुत महत्त्व है। वृक्ष वायुमंडल से कार्बन डाइ-ऑक्साइड अवशोषित करते हैं और अन्य हानिकारक गैस कणों को भी चूसते हैं। बदले में ये हमें प्राणवायु के रूप में ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। यदि हमें पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाए रखना है तो वृक्ष लगाने पर अधिक ध्यान देना होगा।

(च) आज महत्त्वपूर्ण आवश्यकता इस बात की है कि हम अजन्मे प्रदूषण को उत्पन्न न होने दें और बढ़ते हुए प्रदूषण को कम करने का प्रयत्न करें; अन्यथा हमें चेतावनी रूप में यह समझ लेना होगा कि यदि प्रदूषण इसी गति से बढ़ता रहा तो हमारा जीवन पानी के बुलबुले की भाँति समाप्त हो जाएगा और सारे विकास-कार्य हमारा मुँह ताकते रह जाएँगे।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) मोटर वाहन अपने धुएँ में **कार्बन मोनोआक्साइड** छोड़ते हैं।

(ख) **कार्बन मोनोआक्साइड** युक्त वायु में साँस लेने पर गुर्दे संबंधी रोग पैदा हो जाते हैं।

(ग) **वृक्षों** की अंधाधुंध कटाई से भी प्रदूषण बढ़ा है।

(घ) **असंतुलित** जीवन व्यतीत करने से भी पर्यावरण प्रदूषण में बढ़ोत्तरी होती है।

(ङ) मोटर वाहनों के धुएँ में टेट्राएथिल के अतिरिक्त **सीसा** भी होता है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✗)।

IV. सही मेल मिलाओ—

उत्तर–

(क) आज का युग	(i) प्रयत्न करें।
(ख) पेड़-पौधे हमारे लिए	(ii) बुलबुले की भाँति समाप्त हो जाएगा।
(ग) ये विष पीकर	(iii) औद्योगिक युग है।
(घ) प्रदूषण को कम करने का	(iv) बहुत उपयोगी हैं।
(ङ) हमारा जीवन पानी के	(v) हमें अमृत देते हैं।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

I. जल-प्रदूषण तथा वायु-प्रदूषण के विषय में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर इनसे होने वाली हानि के विषय में अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखो।

उत्तर– जल प्रदूष्ण द्वारा होने वाली हानियाँ निम्न हैं—

बड़े-बड़े उद्योगों द्वारा निकाला गया गंदा पानी या कूड़ा कचरा आदि नदी या नहरों आदि में डाल दिया जाता है जिससे जल प्रदूषित होता है। इसके अतिरिक्त ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए जो ईंधन प्रयोग में लाया जाता है, वह प्राय: पूरी तरह से जल नहीं पाता और वह बिना जला ईंधन नदी और नहरों आदि में डाल दिया जाता हैं; इसके द्वारा भी जल प्रदूषित होता है। नदियों में कपड़े धोना, पशुओं को नहलाना आदि भी जल प्रदूषित करता है।

वायु प्रदूषण द्वारा होने वाली हानियाँ निम्न हैं—

यातायात के साधनों के रूप में मोटर वाहनों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। एक मोटर वाहन उतनी ऑक्सीजन

का उपयोग करता है जितनी एक आदमी को एक वर्ष में चाहिए और इसके बदले वह धुएँ के रूप में वायु में बड़ी मात्रा में कार्बन मोनोआक्साइड देता है अर्थात् फैलाता है। मोटर वाहनों से निकलने वाले विषैले धुएँ में टेट्राएथिल के अतिरिक्त सीसा भी होता है जो वायु में फैलकर अनेक रोग जैसे—रक्तचाप, आयुघातक और गुर्दे संबंधी रोग उत्पन्न करता है।

II. पेड़-पौधों का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है, कैसे? अपने विचार कुछ शब्दों में लिखकर अध्यापक/अध्यापिका को दिखाओ।

उत्तर– पेड़-पौधों का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। ये हमें स्वच्छ वातावरण प्रदान करते हैं। पेड़-पौधे विषैली गैसों को पचाकर लाभदायक गैस छोड़ते हैं। ये विष पीकर हमें अमृत देते हैं। इनके द्वारा पर्यावरण-प्रदूषण पर भी रोक लगाई जा सकती है। वृक्ष वायुमंडल से कार्बन डाइ-ऑक्साइड अवशोषित करके बदले में हमें प्राणवायु के रूप में ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। अत: हमें पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाए रखने के लिए वृक्ष लगाने पर अधिक ध्यान देना होगा।

III. नीचे दिए गए चित्र को देखो। बताओ कि इस स्थिति को बदलने के लिए क्या किया जा सकता है?

उत्तर– इस स्थिति को बदलने के लिए प्रदूषणों पर रोक लगाई जानी चाहिए। यातायात के साधनों में विषैला धुँआ न निकले इसके लिए उनमें उपर्युक्त उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। घरों, शादियों व पार्टियों में बजने वाले तेज संगीत आदि पर रोक लगानी चाहिए। प्रदूषण को रोकने के लिए एक मानव ही कुछ प्रयास करके उन पर रोक लगा सकता है और होने वाली अनेक बीमारियों से बचाव कर सकता है।

14 अनमोल वचन

अभ्यास

प्रथम भाग : विकासात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) मीठे वचन सभी लोगों को अपना बना लेते हैं।

(ख) तुलसीदास ने दया की भावना नहीं छोड़ने के लिए कहा है; क्योंकि दया धर्म की जड़ है।

(ग) रहीम जी ने संगति के विषय में यह कहा है कि मनुष्य जैसी संगति में बैठता है वैसा ही गुण पाता है।

(घ) कबीर जी के अनुसार आज का काम कल पर छोड़ने वाले लोग अत्यधिक आलसी होते हैं।

(ङ) कबीरदास जी अपने को सबसे बुरा इसलिए मानते हैं क्योंकि दूसरों के अवगुणों को देखने से पहले हमें अपने अंदर उन अवगुणों को झाँककर देखना चाहिए जो दूसरों को बरु बताते हैं।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) दया (ख) गरीबों का हित करने वाले (ग) प्रेम के धागे को (घ) स्वयं हम

IV. निम्नलिखित शब्दों के सही अर्थ पर (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क)	सुभाय	—	भाना	सुबह	**स्वभाव**
(ख)	कागा	—	कोयल	**कौआ**	कौन
(ग)	भुजंग	—	**साँप**	अच्छा युद्ध	भुजा
(घ)	पंथी	—	रास्ता	**यात्री**	मार्ग

V. सही मिलान करो—

उत्तर– (क) काचो → (iii) कच्चा

(ख) परबत → (iv) पर्वत

(ग) कुटुम → (i) कुटुंब

(घ) परमाथ → (ii) परमार्थ

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) तुलसीदास ने मीठे वचनों को वशीकरण का मंत्र कहा है, क्योंकि मीठे वचन बोलने से दूसरे लोग प्रसन्न होते हैं अर्थात् मीठा बोलने से वह व्यक्ति सभी का प्रिय बनकर जग को अपना बना लेता है। अत: हमें कभी किसी से कठोर वचन नहीं बोलने चाहिए मीठा बोलकर चारों ओर खुशी का वातावरण बनाना चाहिए और सभी का प्रिय बनना चाहए।

(ख) तुलसीदास जी कहते हैं कि हमें संसार में सभी से मिलकर रहना चाहिए, किसी से भी अपशब्द नहीं

बोलने चाहिए। सभी से मीठे वचन बोलकर अपना बना लेना चाहिए क्योंकि हमारे अंदर ही नारायण (भगवान) का वास होता है। अनजाने में भी किसी का मन दुखाने से नारायण अप्रसन्न हो सकते हैं। अर्थात् सभी से अच्छा व्यवहार रखना, मीठे वचन बोलना आदि द्वारा हम नारायण को भी पा सकते हैं। सभी से मीठा बोलना चाहिए क्योंकि नारायण (भगवान) हमें किसी भी रूप में मिल सकते हैं।

(ग) प्रेम का धागा इसलिए नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि एक बार यदि धागा टूट जाता है तो फिर उस धागे को जोड़ने के लिए गाँठ लगाई जाती है। इसी प्रकार प्रेम का धागा तोड़ने या टूटने पर वैसा प्रेम बना रहना कठिन होता है जैसा कि पहले होता है। अर्थात् प्रेम का धागा टूटने पर उसे जोड़ने के लिए उसमें गाँठ लगानी पड़ती है।

(घ) हमें अच्छे लोगों की संगति करनी चाहिए क्योंकि मनुष्य जिस संगति में रहता है वह उसी प्रकार का आचरण ग्रहण करता है। यदि हम गलत संगति में है तो गलत बातें ही सीखने को मिलेगी इसी तरह यदि मनुष्य अच्छी संगति करता है तो वह अच्छी बातें ही सीखेगा।

(ङ) कबीरदास जी ने वाणी के विषय में लिखा है कि मनुष्य को हमेशा मीठी वाणी ही बोलनी चाहिए। मीठी बोली बोलने से दूसरों को भी खुशी होती है और अपना मन भी शीतल होता है। अत: हमें सभी से मीठा वचन बोलकर अपने मन को भी और दूसरों के मन को भी शीतल करना चाहिए।

II. निम्नलिखित दोहों को पूरा करो—

उत्तर– (क) तुलसी **मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ** ओर।
वशीकरण **यह मंत्र है, तज दे वचन कठोर**।।

(ख) बड़ा **हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।**
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

III. निम्नलिखित के भावार्थ लिखो—

उत्तर– (क) कदली ..... दीन।।

भावार्थ—इसका भावार्थ यह है कि हम जिस संगति में रहते हैं हमारे विचार भी उसी तरह के हो जाते हैं।

(ख) काल ..... कब्ब।।

भावार्थ—इसका भाव यह है कि हमें अपना आज का काम आज ही कर लेना चाहिए और उसे कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।

(ग) तुलसी ..... जाय।।

भावार्थ—तुलसीदास जी कहते हैं कि हमें संसार में सभी से मिलकर रहना चाहिए किसी से भी अपशब्द नहीं बोलने चाहिए। सभी से मीठे वचन बोलकर अपना बना लेना चाहिए क्योंकि हमारे अंदर ही नारायण (भगवान) का वास होता है। अनजाने में भी किसी का मन दुखाने से नारायण अप्रसन्न हो सकते हैं अर्थात् सभी से अच्छा व्यवहार रखना, मीठे वचन बोलना आदि द्वारा हम नारायण को भी पा सकते हैं। सभी से मीठा बोलना चाहिए क्योंकि नारायण (भगवान) हमें किसी के भी रूप में मिल सकते हैं।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

मैडम क्यूरी

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) मैडम क्यूरी का बचपन का नाम मेरिया स्कलोदोवस्का था।

(ख) मेरिया के पिता भौतिकी के अध्यापक और विद्यालयों के निरीक्षक थे।

(ग) मेरी की भेंट पियरे क्यूरी नामक वैज्ञानिक से हुई और दोनों में प्रगाढ़ प्रेम के परिणामस्वरूप 1895 में विवाह हो गया।

(घ) रेडियम से कैंसर का इलाज किया जाता है।

(ङ) रेडियम पर कार्य करते रहने के कारण उसकी (रेडियम) किरणों का प्रभाव उसके (मैडम क्यूरी) स्वास्थ्य पर पड़ने के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) भौतिकी के (ख) सन् 1893 में (ग) रेडियम को
(घ) कैंसर (ङ) 1911 ई० में

IV. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाओ—

दृढ़	**दृढ़ता**	स्वतंत्र	**स्वतंत्रता**
मानव	**मानवता**	कुशल	**कुशलता**
स्वस्थ	**स्वस्थता**	सहृदय	**सहृदयता**

V. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखो—

माला	**मालाएँ**	लड़की	**लड़कियाँ**
बहन	**बहनें**	महिला	**महिलाएँ**
घोड़ा	**घोड़े, घोड़ों**	किरण	**किरणें**

द्वितीय श्रेणी : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

उत्तर– (क) मैडम क्यूरी का जन्म 7 नवंबर, 1867 ई० को पोलैंड की राजधानी वारसा में हुआ था।

(ख) मेरिया के पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य कई शौक थे। उसका मन खेल-कूद में भी लगने लगा था। मेरिया घोड़े की सवारी करती और बैडमिंटन खेलती थी।

(ग) मेरिया विज्ञान विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहती थी।

(घ) मेरी को शोध करने की आज्ञा मिल गई। किंतु मेरी के पास साधन नहीं थे। सौभाग्यवश उसकी भेंट पियरे क्यूरी नामक वैज्ञानिक से हो गई। पियरे क्यूरी उच्चकोटि के वैज्ञानिक एवं अनुसंधानकर्ता थे। पियरे यदि मेरी की लगन एवं विज्ञान में गहरी रुचि से प्रभावित हुए तो मेरी पियरे की प्रतिभा और सहृदयता से प्रभावित हुई। दोनों ने एक साथ कार्य करना शुरू किया।

(ङ) यूरेनियम एक स्वतंत्र (मूल) तत्त्व है। वह किन्हीं दो या अनेक तत्त्वों का मिश्रण नहीं है। उन्होंने यह भी देखा कि यूरेनियम के अणुओं में ताप को विकीर्ण करने की क्षमता है। उन्होंने खोज द्वारा पता लगाया कि यूरेनियम के अतिरिक्त थोरियम से भी वैसी ही किरणें निकलती हैं। उन्होंने इस शक्ति को जो किरणें विकीर्ण करती थीं, 'रश्मि विकीर्णक' नाम दिया। इसके बाद क्यूरी दंपती ने निरंतर संघर्ष करके वह तत्त्व ढूँढ़ निकाला, जिसे 'रेडियम' कहा जाता है। उन्हें सामान्य सुविधाएँ भी प्राप्त नहीं थीं। वैज्ञानिकों के मन में उनके कार्य की प्रमाणिकता के विषय में संदेह बना रहा, लेकिन अंत में 1902 में उन्होंने रेडियम तैयार कर लिया। रेडियम से एक प्रकार की रोशनी विकीर्ण होती है। इसमें अद्‌भुत शक्ति होती है। रेडियम के अत्यंत छोटे कण को भी 45 सेमी मोटे शीशे के अंदर बंद करके रखा जाता है। इस खोज का उपयोग चिकित्साशास्त्र में विशेष रूप से किया जा रहा है। रेडियम से कैंसर का इलाज किया जाता है।

(च) रेडियम से एक प्रकार की रोशनी विकीर्ण होती है। इसमें अद्‌भुत शक्ति होती है। रेडियम के अत्यंत छोटे कण को भी 45 सेमी मोटे शीशे के अंदर बंद करके रखा जाता है। इस खोज का उपयोग चिकित्साशास्त्र में विशेष रूप से किया जा रहा है। रेडियम से कैंसर का इलाज किया जाता है।

(छ) क्यूरी दंपती को पहला नोबेल पुरस्कार 1906 ई० में रेडियम की खोज करने पर तथा दूसरा नोबेल पुरस्कार 1911 ई० में रश्मि-विकीर्णन का विश्वकोष तैयार करने में मिला।

(ज) इस पाठ से यह प्रेरणा मिलती है कि यदि कोई व्यक्ति किसी भी कार्य को करने का दृढ़-संकल्प करें तो वह उस ऊँचाई तक अवश्य पहुँच जाता है।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) मेरिया का जन्म पोलैंड की राजधानी **वारसा** में हुआ था।
(ख) वह सदा पढ़ाई में **मग्न** रहती थी।
(ग) मेरिया अत्यंत **परिश्रमी** थी।
(घ) रेडियम से **कैंसर** का इलाज किया जाता है।
(ङ) श्रीमती क्यूरी जीवनभर विज्ञान की **साधना** में रत रहीं।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✓) (च) (✓)।

IV. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

उत्तर– अनुभव — मैडम क्यूरी अपनी माँ का अभाव सबसे अधिक **अनुभव** कर रही थी।
स्वीकृति — श्याम के पिता ने श्याम को वकालत करने की **स्वीकृति** दे दी।
उपार्जन — मोहन अपनी पढ़ाई स्वयं धन **उपार्जन** करके कर रहा है।
अनुसंधान — पियरे क्यूरी उच्चकोटि के वैज्ञानिक एवं **अनुसंधानकर्ता** थे।

साधिका — श्रीमति क्यूरी सच्ची विज्ञान **साधिका** थी।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

प्रिटोरिया जेल से

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) यह पत्र गांधी जी ने प्रिटोरिया जेल से लिखा है।
(ख) गाँधी जी को जेल से प्रतिमास एक पत्र लिखने का अधिकार मिला था।
(ग) गाँधी जी ने जेल से अपने पुत्र मणिलाल गांधी को पत्र लिखना पसंद किया।
(घ) पत्र से 'बा' के बारे में यह पता चलता है कि 'बा' अच्छी हो गई होंगी।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) मणिलाल गाँधी को (ख) कर्त्तव्य का बोध (ग) गरीबी (घ) सूर्योदय से पहले

IV. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए—

उत्तर–

सूर्य + उदय	=	**सूर्योदय**	महा + ऋषि	=	**महर्षि**
भाग्य + उदय	=	**भाग्योदय**	सप्त + ऋषि	=	**सप्तर्षि**
चंद्र + उदय	=	**चंद्रोदय**	देव + ऋषि	=	**देवर्षि**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) पत्र में गाँधी जी ने अपने पुत्र को शिक्षा के बारे में यह बताया है कि केवल अक्षर-ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। सच्ची शिक्षा तो चरित्र-निर्माण और कर्त्तव्य का बोध है।

(ख) गाँधी जी ने संसार में तीन बातों को महत्त्वपूर्ण बताया है अपनी आत्मा का, अपने आप का और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना।

(ग) हिंदी, गुजराती और अंग्रेजी के चुने हुए भजनों एवं कविताओं का एक संग्रह तैयार करना चाहिए। वर्ष के अंत में तुम्हें अपना यह संग्रह बहुत मूल्यवान प्रतीत होगा। काम की अधिकता से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए और न यह सोचना चाहिए कि यह कैसे होगा और पहले क्या करूँ? शांत चित्त से विचारपूर्वक तुमने यदि सद्‌गुणों को प्राप्त करने की चेष्टा की तो वे तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी और मूल्यवान प्रमाणित होंगे।

(घ) सूर्योदय से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है। प्रयत्नपूर्वक एवं निश्चित समय पर ही प्रार्थना करनी चाहिए। यह नियमितता तुम्हें अपने जीवन में आगे चलकर बहुत सहायक सिद्‌ध होगी।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) मेरे बारे में तुम जरा भी **चिंता** मत करना।
(ख) सच्ची शिक्षा तो **चरित्र-निर्माण** और **कर्त्तव्य** का बोध है।
(ग) गरीबी में ही **सुख** है।
(घ) **संगीत** में भी बराबर रुचि रखना।
(ङ) **सूर्योदय** से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✓)।

IV. निम्नलिखित प्रत्ययों को शब्द बनाकर इनका वाक्यों में प्रयोग करो—

उत्तर–

गरीब + ई	गरीबी	=	**गरीबी** में ही अत्यंत सुख होता है।
मूल्य + वान	मूल्यवान	=	समय बहुत **मूल्यवान** होता है।
प्रयत्न + पूर्वक	प्रयत्नपूर्वक	=	हमें कठिन से कठिन कार्य को **प्रयत्नपूर्वक** करना चाहिए।
सु + व्यवस्थित	सुव्यवस्थित	=	सभी को अपनी चीजें **सुव्यवस्थित** ढंग से रखनी चाहिए।
नियमित + ता	नियमितता	=	**नियमितता** जीवन में हमेशा सहायक सिद्ध होती है।

17 जीवनदाता सूर्य

अभ्यास

प्रथम श्रृंग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) हमारा सौरमंडल सूर्य और उसके आठ ग्रहों से मिलकर बना है।
(ख) सूर्य 71% हाइड्रोजन, 26% हीलियम और 3% अन्य गैसों से मिलकर बना है।
(ग) सूर्य देखने में आग के गोले जैसा लगता है।
(घ) सूर्य के न निकलने पर चारों ओर अँधेरा छा जाएगा।
(ङ) प्रकृति हमें रंग-बिरंगी इसलिए दिखाई देती है क्योंकि धूप से पृथ्वी पर चीजों में रंग उत्पन्न होता है।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) आठ (ख) पंद्रह करोड़ किमी (ग) सूर्य (घ) प्रकाश-संश्लेषण द्वारा

IV. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखो—

उत्तर–

सूर्य	—	**भानु**	**दिवाकर**	**भास्कर**
पृथ्वी	—	**धरा**	**धरती**	**धरित्री**
वायु	—	**पवन**	**हवा**	**वात**
वर्षा	—	**बारिश**	**बरसात**	**वृष्टि**
जल	—	**पानी**	**नीर**	**वारि**

V. निम्नलिखित शब्द श्रुतिसम भिन्नार्थक हैं, इनके अलग-अलग अर्थ लिखो—

उत्तर–

अनिल	—	**हवा**	अनल	—	**आग**
दिवा	—	**दिन**	दिव्य	—	**अनोखा**
ग्रह	—	**नक्षत्र**	गृह	—	**घर**
तप	—	**तपस्या**	ताप	—	**ज्वर**

द्वितीय श्रृंग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) हमारा सौरमंडल सूर्य और उसके आठ ग्रहों से मिलकर बना है।
(ख) सूर्य हमारी पृथ्वी से साढ़े तेरह लाख गुना बड़ा है। लेकिन फिर भी हमें छोटा दिखाई देता है।
(ग) सूर्य के धरातल से धधकती हुई ज्वाला या गैसों की हजारों किलोमीटर ऊँची लपटें निकलती रहती हैं। इन लपटों के कारण सूर्य के चारों ओर तेज का एक घेरा-सा सदैव बना रहता है। सूर्य देखने में आग का गोला जैसा प्रतीत होता है।
(घ) सौरमंडल में सूर्य ही प्रकाश एवं ऊर्जा का स्रोत है। सूर्य के बिना तो पृथ्वी पर जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। हम कह सकते हैं कि सूर्य ही हमारा पालनकर्ता है, हमारा जीवनदाता है।
(ङ) सूर्य के न निकलने पर चारों ओर अँधेरा छा जाने वाली स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
(च) सूर्य का धार्मिक महत्त्व यह है प्राचीनकाल में ही नहीं, आज भी लोग सूर्य को देवता मानते हैं और पूजा करते हैं। लोग प्रात:काल सूर्य को अर्घ्य (जल) देते हैं। कोणार्क का ऐतिहासिक सूर्य मंदिर विश्वप्रसिद्ध है।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) पृथ्वी सूर्य के **चारों ओर** चक्कर लगाती है।
(ख) सूर्य हमारी पृथ्वी से **पंद्रह करोड़ किमी०** दूर है।
(ग) सूर्य ही **प्रकाश** एवं **ऊर्जा** का स्रोत है।
(घ) वायुमंडल की सारी नमी **बर्फ** बन जाएगी।
(ङ) कोणार्क का ऐतिहासिक **सूर्य मंदिर** विश्वप्रसिद्ध है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✗) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✗) (च) (✓)।

IV. एक शब्द में उत्तर दीजिए—

उत्तर– (क) पृथ्वी (ख) गैसों के समूह से (ग) सूर्य (घ) धूप।

V. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

उत्तर– आश्चर्य — **आश्चर्य** की बात यह हुई कि रोहन बिना पढ़े ही प्रथम आ गया।
ठोस — पृथ्वी एक **ठोस** ग्रह है।
ऊर्जा — सूर्य हमें **ऊर्जा** प्रदान करता है।
अन्नदाता — गरीब मोहन अपने गाँव के जमींदार को **अन्नदाता** मानता है।
एकत्र — सभी बच्चे मैदान में **एकत्र** होकर खेल रहे थे।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

I. सूर्य के सभी ग्रहों के नाम लिखो।

उत्तर– बुध, मंगल, पृथ्वी, शुक्र, बृहस्पति, शनि, अरुण और वरुण।

II. नीचे उगते हुए सूर्य के चित्र के साथ खिलते फूल, पशु-पक्षी आदि दिए गए हैं। इस चित्र में अपनी कल्पना से रंग भरो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

घमंड का फल

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) जामुन का पेड़ बहुत मजबूत था।

(ख) जामुन के पेड़ ने बाँस के पेड़ से रूखे स्वर में कहा, ''तुम तो बड़े आज्ञाकारी हो। तुम हवा की दिशा तथा गति के अनुसार क्यों हिलते-डुलते रहते हो।

(ग) बाँस के पेड़ ने हवा के बारे में यह कहा कि अगर हवा तेज गति से चलने लगी तो यह नुकसानदायक सिद्ध हो सकती है। अगर हवा बहुत ज्यादा तेज गति से चलने लगे तो उसका सम्मान करना चाहिए। नहीं तो .....।''

(घ) उस समय चल रही मंद-मंद हवा ने जामुन के पेड़ तथा बाँस के पेड़ के बीच चल रहे संवाद को सुन लिया। हवा जामुन के पेड़ से तेज वेग से टकराती हुई आगे निकल गई। कुछ देर उपरांत, अपने में कुछ और शक्ति समेटते हुए हवा ने अपने-आपको और वेगशाली बना लिया। वह हवा एक तूफान में बदल गई।

(ङ) यदि जामुन का पेड़ बाँस के पेड़ की बात मान लेता तो जामुन के पेड़ का अंत नहीं हुआ होता।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) मजबूत (ख) बाँस का पेड़ (ग) हवा ने
(घ) जामुन का पेड़

IV. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

उत्तर– आज्ञाकारी — रहीम अपने माता-पिता का **आज्ञाकारी** पुत्र है।
कमजोर — बाँस का पेड़ **कमजोर** था।
घमंडी — रीतू को अपनी सुंदरता पर बहुत **घमंड** है।
क्रोधित — श्याम ने **क्रोधित** होकर अनुज को डाँटा।
सम्मान — हमें सभी का **सम्मान** करना चाहिए।

V. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखो—

उत्तर– **शब्द**	**समानार्थक**	**शब्द**	**समानार्थक**
क्रोधित	**गुस्सा**	समय	**काल**
संवाद	**बातचीत**	सम्मान	**आदर**
शक्ति	**बल**	असर	**प्रभाव**

VI. नीचे दिए वर्ग में से निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द ढूँढकर लिखो—

उत्तर– पेड़, हवा, दिशा, संसार, सूर्य, जल।

पेड़	—	**तरु, वृक्ष**	हवा	—	**पवन, समीर**
दिशा	—	**तह,**	संसार	—	**विश्व, जग**
सूर्य	—	**दिनकर, दिवाकर**	जल	—	**नीर, पानी**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

उत्तर– (क) बाँस का पेड़ पतला-सा तथा लचीला था।

(ख) तुम भी मेरी तरह शान से सीधे खड़े हुआ करो। तुम हवा से कह दो कि उसकी आज्ञानुसार नहीं चलोगे। कुछ साहस का परिचय दो। इस संसार में बलवानों का ही बोलबाला है।'' जामुन के पेड़ की बातें सुनकर बाँस के पेड़ ने चुप रहना ही ठीक समझा।

(ग) अगर हवा तेज गति से चलने लगी तो यह नुकसानदायक सिद्ध हो सकती है। अगर हवा बहुत ज्यादा तेज गति से चलने लगे तो उसका सम्मान करना चाहिए। नहीं तो .....।''

उस समय चल रही मंद-मंद हवा ने जामुन के पेड़ तथा बाँस के पेड़ के बीच चल रहे संवाद को सुन लिया। हवा जामुन के पेड़ से तेज वेग से टकराती हुई आगे निकल गई।

(घ) हवा जामुन के पेड़ से तेज वेग से टकराती हुई आगे निकल गई। कुछ देर उपरांत, अपने में कुछ और शक्ति समेटते हुए हवा ने अपने-आपको और वेगशाली बना लिया। वह हवा एक तूफान में बदल गई। बाँस का पेड़ उस तेज हवा के टकराने से लगभग पूरा ही झुक गया था। फिर वही तूफानी हवा जामुन के पेड़ से दोबारा जा टकराई। वह ज्यों-का-त्यों ही खड़ा रहा। उस तूफानी हवा ने उसकी जड़ों पर प्रहार किया। इस वजह से उसकी जड़ें कमजोर हो गईं। उस पेड़ की शाखाओं ने तूफानी हवाओं को रोकने की भरपूर कोशिश की, परंतु तेज हवाओं ने पूरी शक्ति लगाकर उन शाखाओं को पीछे की ओर धकेल दिया। इस प्रकार जामुन का पेड़ अपना संतुलन खो बैठा। उसकी जड़ें कमजोर हो गईं तथा अपना स्थान छोड़ दिया और उसके बाद वह पेड़ धराशायी हो गया।

(ङ) इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि किसी को भी अपने ऊपर घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि घमंड का फल हमेशा बुरा होता है।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) बाँस के पेड़ के समीप ही एक **जामुन** का भी पेड़ था।

(ख) जामुन का पेड़ बहुत **मजबूत** था।

(ग) हवा ने दोनों पेड़ों के मध्य का **संवाद** सुन लिया था।

(घ) जामुन का पेड़ अपना **संतुलन** खो बैठा।

(ङ) **घमंड** का फल हमेशा **बुरा** होता है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✓)।

IV. सही मिलान करो—

उत्तर–

(क) जामुन का पेड़	(v) पतला-सा तथा लचीला था।
(ख) बाँस का पेड़	(ii) शान से खड़े हुआ करो।
(ग) इस संसार में	(iv) बलवानों का ही बोलबाला है।
(घ) तुम भी मेरी तरह	(iii) बहुत मजबूत था।
(ङ) घमंड का फल	(i) हमेशा बुरा होता है।

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अपनी रक्षा स्वयं करें।

अभ्यास

प्रथम भाग : विकल्पात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) हरिया के पास एक गाय और एक घोड़ा था।

(ख) जंगल में साथ रहने के कारण गाय, घोड़ा, बकरी और गधा में मित्रता हो गई।

(ग) नहीं चीकू खरगोश की उन चारों जानवरों ने मदद नहीं की।

(घ) अंत में चीकू खरगोश यह सोचता है कि दूसरों पर भरोसा करने वाला सबसे बड़ा बेवकूफ होता है और हमेशा धोखा खाता है।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) शहदपुर में (ख) लखिया धोबी (ग) खरगोश के

(घ) गाय के पास (ङ) स्वयं उसी ने

IV. निम्नलिखित शब्दों में 'ता' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए—

उत्तर–

मित्र	=	**मित्रता**	नित्य	=	**नित्य + ता**
निकट	=	**निकटता**	उदार	=	**उदार + ता**
कायर	=	**कायरता**	कठोर	=	**कठोर + ता**
निर्बल	=	**निर्बलता**	शीघ्र	=	**शीघ्र + ता**
वीरा	=	**वीरता**	सफल	=	**सफल + ता**

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) हरिया के पड़ोस में लखिया धोबी रहता था।

(ख) खरगोश के पीछे शिकारी कुत्ता झपटा।

(ग) खरगोश अपनी रक्षा के लिए चारों जानवरों गाय, घोड़ा, बकरी और गधे के पास गया।

(घ) बकरी ने कहा, ''भाई खरगोश! कृपा करके तुम मेरे पास इधर मत आना। तुम्हारे पीछे कुत्ता लगा हुआ है और मैं शिकारी कुत्तों से बहुत डरती हूँ। उसका क्या है? वह तो मुझे भी चीर-फाड़ कर खा जाएगा।''

(ङ) 'दूसरों पर भरोसा करने वाला सबसे बड़ा बेवकूफ होता है और हमेशा धोखा खाता है। इसलिए सभी को दूसरों पर भरोसा न करके अपने आप अपनी रक्षा स्वयं करनी चाहिए।'

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) हरिया के पास एक **गाय** और एक **घोड़ा** था।

(ख) पास में एक **चीकू नाम का** खरगोश रहता था।

(ग) यह कुत्ता बड़ा ही **दुष्ट** है।

(घ) शिकारी कुत्ता **निराश** होकर वापस लौट गया।

(ङ) सभी को अपनी **रक्षा** स्वयं करनी चाहिए।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✗) (ङ) (✓) (च) (✓)।

IV. निम्नलिखित वाक्यों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

उत्तर–

दिन	—	महेश **दिन**-रात मेहनत करके पढ़ाई कर रहा है।
दुष्ट	—	खरगोश ने कहा, ''शिकारी कुत्ता बहुत **दुष्ट** है।''
मदद	—	हमें दूसरों की **मदद** हमेशा करनी चाहिए।
निराश	—	कुत्ता **निराश** होकर वापस लौट गया।
संतोष	—	हमें हमेशा थोड़े में ही **संतोष** कर लेना चाहिए।

V. किसने, किससे कहा?

उत्तर– (क) **गाय** ने **खरगोश** से (ख) **गधे** ने **खरगोश** से

(ग) **खरगोश** ने **गधे** से (घ) **खरगोश** ने **स्वयं** को

तृतीय भाग : विविध मूल्यांकन

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

सच्ची मित्रता

अभ्यास

प्रथम् भाग : विकासात्मक मूल्यांकन

I. मौखिक प्रश्नोत्तर–

उत्तर– (क) सुदामा श्रीकृष्ण से मिलने आए थे।
(ख) सुदामा के पैर श्रीकृष्ण ने धोए।
(ग) सुदामा भेंट स्वरूप चावल लेकर गए थे।
(घ) संकट के काम आने वाला ही मित्र सच्चा होता है।
(ङ) यह कहानी सच्ची मित्रता के मानवीय गुण को प्रदर्शित करती है।

II. पढ़ना सीखो—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) सुदामा (ख) सुदामा के (ग) चार
(घ) कुछ दिनों तक (ङ) महल

IV. निम्नलिखित शब्दों को पाठ के अनुसार क्रम से लिखिए—

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

द्वितीय भाग : रचनात्मक मूल्यांकन

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

उत्तर– (क) सच्ची मित्रता श्रीकृष्ण और सुदामा में थी।
(ख) द्वार पर सुदामा आए थे जो कि श्रीकृष्ण से मिलने के लिए आए थे।
(ग) सुदामा की दीन दशा देखकर श्रीकृष्ण ने भावविह्वल होकर सुदामा को गले से लगा लिया।
(घ) सुदामा कृष्ण के लिए चावल की भेंट लाए थे।
(ङ) घर पहुँचने पर सुदामा इसलिए अचंभित रह जाते हैं क्योंकि उनकी (सुदामा की) झोंपड़ी के स्थान पर महल बना हुआ था।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

उत्तर– (क) महाराज! वह बहुत ही **निर्धन** मालूम पड़ता है।
(ख) रुक्मिणी सुदामा का **अभिवादन** करती हैं।
(ग) अहा! कितने **स्वादिष्ट** चावल हैं?
(घ) सुदामा का घर बहुत **पुराना** और **टूटा-फूटा** था।
(ङ) श्रीकृष्ण आपके **सच्चे** मित्र हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाओ—

उत्तर– (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)।

IV. किसने, किससे कहा?

उत्तर– (क) **द्वारपाल** ने **श्रीकृष्ण** से
(ख) **श्रीकृष्ण** ने **सुदामा** से
(ग) **सुदामा** ने **श्रीकृष्ण** से
(घ) **पत्नी** ने **सुदामा** से
(ङ) **सुदामा** ने **पत्नी** से

तृतीय विविध मूल्यांकन

I. सच्चे मित्र कैसे होते हैं? उनमें क्या-क्या गुण होने चाहिए? अपने अध्यापक/अध्यापिका से पता करके लिखो।

उत्तर– सच्चे मित्र का पहला गुण यह होता है कि वह प्रत्येक विपत्ति में अपने मित्र की मदद करें। सच्चा मित्र वही होता है जो मुसीबतों में भी अपने मित्र का साथ कभी न छोड़े और उसकी हर एक स्थिति में मदद करने को तत्पर रहे। यही एक सच्चे मित्र का गुण होता है।

II. सच्ची मित्रता से संबंधित कहानियाँ पढ़ो।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।